

# SHRI ANUP RANJAN PANDEY

Shri Anup Ranjan Pandey is a traditional Chhattisgarhi folk theatre artist of national and international repute. His commitment to the circulation of traditional music of tribes of Bastar has led to the origination and emergence of Bastar Band, the ensemble which, under his direction, associates with the tribal artists from various dialects of Bastar.

2. Born on July 21, 1965, in Bilaspur, Chhattisgarh in a farmer family, Shri Pandey, was exposed to bhajans sung by his mother from his early childhood. His academic interests towards arts came from his father. He received his Post-Graduation degree in Commerce from CMD College, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur in 1990; PG Diploma in folk music from Indira Kala Sangeet University, Khairagarh in 2001 and received his Doctorate in Philosophy in folk music from Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya, Khairagarh in 2015.

3. Shri Pandey first met the then theatre doyen late Shri Habib Tanvir in 1988, and soon after he joined the Tanvir's renowned Naya Theatre in 1990. He went on to play diverse roles in Naya Theatre at numerous famous productions like Aagra Bazar, Charan Das Chor, Mudra Rakshas, Jin Lahore Dekhiya Wo Janmyai Nai, Sadak, , Mitti Ki Gaadi, Mor Naam Damand Ke Naam Sasural, Dekh rahe hain Nain, Rajrakt, Venisamharam and more in number of places throughout the country, and major stages in Southeast Asia, major European countries like England and Germany, South Africa etc. During his college days, he proactively took part in plays, alongwith leading a team of Kala Jattha performing Nukkad Nataks in more than thousands of villages of Madhya Pradesh and Chhattisgarh under the National Literacy Mission's Literacy Awareness Campaign. In 1994, he was designated as the Program Coordinator of the State Resource Centre, Bhopal District.He has authored about 50 books for neo-literates in local tribal languages like Gondi, Bhatri, Halbi, Dorli along with Hindi and Chhattisgarhi.

4. Shri Pandey's interest leapt out for a particular traditional Chhattisgarhi folk theatre called Naacha which led him to explore and collect more than 143 manuscripts thousands of songs and narratives of the art forms, of which the oldest ones dates back to 1930s. He began the exploration of musical instruments in the 1990s where he collected the rare traditional musical instruments of Chhattisgarh and exhibited it in different parts of the state, in Bhilai with collaboration of Indira Gandhi Rashtriya Manav Sanghralay, Bhopal titled "Chinhari". He later donated this to the Mahanta Ghasidas Smarak Sangrahalaya, Chhattisgarh State Museum, Raipur. In 2018, his research included more than 200 different folk wind instruments from all parts the country, a showcase of which was held at Madhya Pradesh Sanskriti Parishad Tribal Museum, Bhopal by the name of "Gandharva" in Lok Ranga Festival.

5. Shri Pandey founded Bastar Band alongwith the local tribal community and various other tribal friends, he discovered more than 60 folk and tribal musical instruments and hundreds of folk and tribal tunes from distinct dialects, many of which were believed to be less prevalent and many were yet not known to the world. A band comprising 60 different rare folk and tribal music instruments coming together in one note. This was all being done while Bastar was already going through a period of violence to give the message, "Choose Dhols over Guns". The very First performance of the Bastar Band outside Chhattisgarh happened in Magh Sankranti Festival, Jorethang, Sikkim 2008. Members of Bastar band have performed more than thousands of shows in the nation and abroad including national and international stages like The Commonwealth Games, India, Theatre Olympics India, Deshaj, Bharat Mahotsava, Bharat Rang Mahotsava, International Indigenous Festival etc.

6. Shri Pandey has been the recipient of Dau Mandraji Lok Kala Samman, Chhattisgarh Rajya Alankaran, Govt. Chhattisgarh, Rashtriya Swayam Siddh Samman and many other accolades. He is also a Senior Fellow of Ministry of Culture, Govt. of India and also holds a position in General Council in Sangeet Natak Akademi, New Delhi, Member of Advisory Committee for Tribal festival, National School of Drama, Delhi and Programme Committee Member of South Central Zone, Nagpur, Ministry of Culture, Govt. of India.

पद्म श्री

# श्री अनूप रंजन पाण्डेय



श्री अनूप रंजन पाण्डेय पारंपरिक छत्तीसगढी लोक रंगमंच के राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार हैं। बस्तर के जनजातीय पारंपरिक संगीत के प्रचार-प्रसार के प्रति आपकी प्रतिबद्धता के कारण बस्तर की विभिन्न बोलियों के जन-जातीय कलाकारों के सहयोग से आपके निर्देशन में बस्तर बैंड संगीत-मंडली का जन्म हुआ।

2. आपका जन्म 21 जुलाई, 1965 में बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में एक किसान परिवार हुआ था। आपको बचपन से ही अपनी माता द्वारा गाए गए भजन सुनने को मिलते थे। कलाओं के प्रति आपकी रूचि आपके पिता से मिली। आपने सीएमडी कॉलेज, गुरु घासीदास विश्विद्यालय, बिलासपुर से 1990 में वाणिज्य शास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की;इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से वर्ष 2001 में आपने लोक संगीत में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से वर्ष 2015 में लोक संगीत में डॉक्टरेट ऑफ फिलोसफी की उपाधि प्राप्त की।

3. वर्ष 1988 में आपकी भेंट उस समय के रंगमंच जगत के विख्यात कलाकार स्वर्गीय श्री हबीब तनवीर से हुई, और उनके साथ हुई भेंट के तुरंत बाद आप 1990 में उनके प्रसिद्ध नया थियेटर में शामिल हो गए। आपनेनया थियेटर में रहते हुए देश भर के विभिन्न स्थानों में, दक्षिण पूर्व एशिया, इंग्लैंड और जर्मनी,दक्षिण अफ्रीका आदि जैसे प्रमुख यूरोपीय देशों में बड़े मंचों पर आगरा बाजार, चरण दास चोर,मुद्रा राक्षस, जिन लाहौर देखिया वो जन्म्या नईं, सड़क, मिट्टी की गाड़ी, मोर नाम दमांद के नाम ससुराल, देख रहे हैं नैन, राजरक्त, वेनिस संहारम और इसी प्रकार की अनेक लोकप्रिय प्रस्तुतियों में अलग-अलग भूमिकाएं निभाईं। अपने कॉलेज के दिनों के दौरान आपने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के साक्षरता जागरूकता अभियान के तहत मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के हजारों गावों में नुककड़ नाटक करने वाले कला जत्था की एक टीम का नेतृत्व करते हुए कई नाटकों में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्ष 1994 में आपको स्टेट रिसोर्स सेंटर, भोपाल जिले का कार्यक्रम समन्वयकर्ता नामित किया गया। आपने हिंदी और छत्तीगढ़ी भाषाओं के साथ-साथ गोंडी, भात्री, हल्वी, डोरली, जैसी स्थानीय जन-जातीय भाषाओं में नव साक्षरों के लिए लगभग 50 पुस्तकों की रचना की।

4. आपकी रूचि नाच नाम से ज्ञात विशिष्ट पारंपरिक छत्तीसगढ़ी लोक रंगमंच की ओर बढ़ी और इसके फलस्वरूप आपने गीतों और विभिन्न कला कथाओं की 143 पांडुलिपियों का पता लगाया और उनका संकलन किया। इनमें से सबसे पुरानी पांडुलिपि 1930 के दशक की है। आपने 1990 के दशक में वाद्ययंत्रों की खोज शुरू की और आपने छत्तीसगढ़ के दुर्लभ पारंपरिक वाद्ययंत्रों का संग्रह किया तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के सहयोग से "चिंहारी" शीर्षक से भिलाई में राज्य के विभिन्न हिस्सों में उनकी प्रदर्शनी लगाई। बाद में आपने इन्हें महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, छत्तीसगढ़ राज्य संग्रहालय, रायपुर को दान कर दिया। वर्ष 2018 में, आपके द्वारा किए गए अनुसंधान में देश के सभी भागों से 200 से अधिक विभिन्न लोक पवन वाद्ययंत्र शामिल थे, जिनकी प्रदर्शनी लोक रंग महोत्सव में "गंधर्व" के नाम से मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद जनजातीय संग्रहालय, भोपाल में लगाई गई थी।

5. आपने स्थानीय जन-जातीय समुदाय और अन्य जन-जातीय मित्रों के सहयोग से बस्तर बैंड की स्थापना की। आपने 60 से अधिक लोक और जनजातीय संगीत वाद्ययंत्रों तथा विभिन्न बोलियों की कई सौ लोक और जनजातीय धुनों की खोज की जिनमें से बहुत को कम प्रचलित माना जाता था और कुछेक के बारे में तो संसार को पता ही नहीं था। 60 विभिन्न दुर्लभ लोक और जनजातीय संगीत वाद्ययंत्रों से मिलकर बना एक बैंड एक स्थान में बज रहा है। जब बस्तर हिंसा के दौर से गुजर रहा था तब "बंदूक की बजाय ढोल चुनें" नामक संदेश देने के लिए यह प्रयास किया गया था। छत्तीसगढ़ के बाहर बस्तर बैंड का सबसे पहला वादन माघ संक्रान्ति महोत्सव, जोरेथांग, सिक्किम, 2008 में हुआ था। बस्तर बैंड के सदस्यों ने देश और विदेश में हजारों कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इनमें भारत में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल, थियेटर ओलंपिक्स इंडिया,देशज, भारत महोत्सव, भारत रंग महोत्सव, इंटरनेशनल इंडीजिनियस फेस्टीवल आदि जैसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच शामिल हैं।

6. आपको दाऊ मंदराजी लोक कला सम्मान, छत्तीसगढ़ सरकार का छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण, राष्ट्रीय स्वयं सिद्ध सम्मान और ऐसे ही कई अन्य सम्मान प्राप्त हुए हैं। आप भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के एक वरिष्ठ फेलो भी हैं और संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की महासभा के सदस्य भी हैं। आप जन-जातीय महोत्सव समिति, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली की सलाहकार समिति के सदस्य तथा भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के दक्षिण सेंट्रल ज़ोन, नागपुरकी प्रोग्राम समिति के सदस्य हैं।